179

बारानी क्षेत्रों में उन्नत बेर के बगीचे लगाना

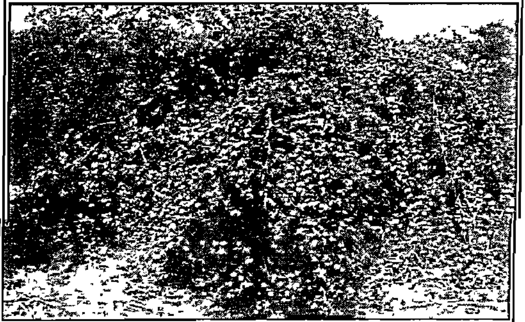

भाकृअनुप
ICAR

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान,
जोधपुर

2004

कलिकायन किये हुए शाखाओं को छोड़ कर शेष सभी शाखाओं को समय–समय पर हटाते रहे तथा उन्नत किस्म वाली शाखा को भी एक उपर उठता हुआ पेड़ बनाने के लिये कंटाई छंटाई करते रहना चाहिये। चूकि इन पेड़ों का जड़ तंत्र पहले से ही पूर्ण विकसित होता है इसलिये इनमें दूसरे साल से ही फल उत्पादन शुरू हो जाता है। औसत उत्पादन 10–40 किलो प्रति पेड़ मिल सकता है।

संकलन : **डॉ. पी. आर. मेघवाल**

संपादन : डॉ.बी.एम. शर्मा एवं डॉ.आर.के. गोयल

प्रकाशक : डॉ. प्रताप नारायण, निदेशक, काजरी, जोधपुर

सौजन्य : भू विकास विभाग, ग्रामीण विकास मत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली

सेन्टीमीटर छोड़कर काट देते है। जुलाई में वर्षा होने के साथ ही इससे नई शाखाऐं निकलती है। शाखाऐं जब पेन्सिल की मोटाई की होती है उन पर कलिकायन कर दिया जाता है। ऐसे पेड़ों की बीच में 5–6 मीटर की यथा संभव दूरी रखनी चाहिये।

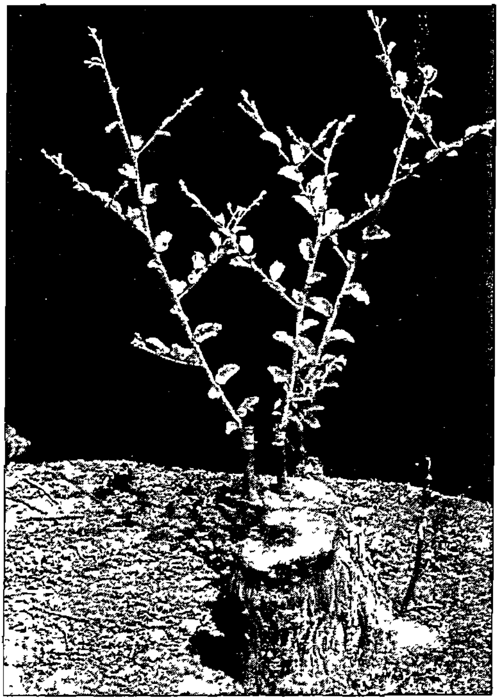

इसी प्रकार अगर झड़ बेर के पुराने पौधो पर कलिकायन करनी हो तो झड़ बेर के पौधो को तो किसान हर वर्ष नवम्बर–दिसम्बर में पाले के लिये जमीन की सतह से काटते है तथा अगले साल की वर्षा ऋतु में पुनः वे स्फूटित होते है। स्फूटित हुई शाखाओं की उचित मोटाई होने पर उन पर भी कलिकायन कर दिया जाता है।

पश्चिमी राजस्थान के अधिकतर भागों में पानी की गंभीर समस्या है। इस क्षेत्र में सिंचाई तो दूर पीने के लिये भी पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध नही हैं। इसके अतिरिक्त यहाॅ की भौगोलिक एवं जलवायु परिस्थितिया इतनी विपरीत है कि बिना सिंचाई के फलदार बगीचा लगाने की कोई सोच भी नही सकता। बेर एक ऐसा फलदार वृक्ष है जिसको इन विकट परिस्थितियों में भी वर्षा आधारित फल के रूप में लगा सकते हैं।

बेर की जातियाँ (प्रकार)

बेर की निम्नलिखित तीन जातियां होती है :

प्रचलित नाम		वैज्ञानिक नाम
(i) झड़ बेर (पाला)	–	जिजिफस नुमुलेरियां
(ii) बोरड़ी	–	जिजिफस रोटण्डीफोलिया
(iii) उन्नत बेर	–	जिजिफस मोरीसियना

उन्नत बेर की किस्में

उन्नत बेर की 300 से भी ज्यादा किस्में विकसित हो चुकी है, परन्तु सभी किस्में बारानी क्षेत्रों के लिये उपयुक्त नहीं है । पकने के समय की दृष्टी से विभिन्न किस्मों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किंया गया है।

अगेती किस्में – दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में पकना शुरू होकर पूरे जनवरी माह तक चलती है – जैसे गोला, मूण्डिया

मध्यम किस्में – मध्य जनवरी से मध्य फरवरी तक

पकती है जैसे–सेव, कैथली, छुहारा, बनारसी इत्यादि।

देर से पकने वाली किस्में – फरवरी मार्च में तुड़ाई करने लायक है जैसे – उमरान, इलाइची। शुष्क क्षेत्रों के लिये अगेती व मध्यम समय में पकने वाली किस्में उपयुक्त पाई गई है।

बेर का बगीचा लगाने की विधियाँ

बरानी क्षेत्रों में जहां पर औसत वार्षिक वर्षा 300 मि. ली. से अधिक हो, बेर का बगीचा दो विधियों से लगा सकते है। (i) इन सिटु कलिकायन व (ii) शीर्ष क्रिया द्वारा (टाप वर्किंग)

(i) इन–सिटु कलिकायन

शुष्क क्षेत्रों में वर्षा आधारित क्षेत्रों में विधिवत बगीचा लगाने के लिये यह विधि सर्वोतम है। इसमें सर्वप्रथम खेत का रेखांकन करते है। रेखाकंन करने के लिये 6 X 6 मीटर की दूरी पर लकड़ी की खूंटिया गाड़ देते है। प्रत्येक खूंटी की जगह दो फुट व्यास के व दो फुट गहरे गड्ढे खोदते है। यह कार्य मई जून में करना चाहिये। गड्ढों को कुछ दिन खुला छोड़ने के पश्चात 10 किलो देशी खाद, खेत की मिट्टी व 50 ग्राम एण्डोसल्फान पाउडर के मिश्रण से गड्ढे भर देते है। तत्पश्चात मानसून की पहली वर्षा होने पर इन गड्ढों में बोरड़ी के बीज बो देते है। बीजों का अंकूरण 15–20 दिन में हो जाता है। गड्ढों में से खरपतवार इत्यादि निकालते रहना चाहिए। इसके बाद अगले वर्ष अप्रेल महीने में इनको जमीन की सतह से 15–20

सेन्टीमीटर छोड़कर काट दिये [illegible]
पौधे सुषुप्तावस्था में आ जाते है इन [illegible]
कोई सिंचाई की आवश्यकता भी नही होती [illegible]
जुलाई में वर्षा होने के एक महीने बाद [illegible]
कलिकायन करने लायक नई शाखाये निकल आती है। इन पर पेच विधि से वांच्छित किस्म की कलिका लेकर कलिकायन कर देते है। कलिकायन करने के बाद पौधों के जंगली भाग से निकलने वाली शाखाओं को हटाते रहते है एवं नियमित संघाई व कटाई–छंटाई करते रहते है। इस प्रकार तैयार पौधों पर चौथे वर्ष में फल आना शुरू होता है। उपज मुख्य रूप से वर्ष विशेष में होने वाली कुल वर्षा पर निर्भर करती है।

(ii) शीर्ष क्रिया द्वारा

राजस्थान के अधिकांश भागों में बोरड़ी व झड़ बेर के पौधे बहुतायत में पाये जाते है। झड़ बेर यद्यपि झाड़ीनुमा होता है परन्तु इसको छांग कर पेड़ का रूप भी दिया जा सकता है। बोरड़ी पेड़नुमा होती है। इसके फल झड़ बेर की अपेक्षा बड़े होते है। इन दोनों जातियों के फलों का कोई आर्थिक महत्त्व नहीं है। इनकी पत्तिया प्रोटीन का बहुत अच्छा स्त्रोत है तथा प्रमुख चारा फसल है। इन पेड़ो को साधारणतया क्रत्रिम रूप से कोई नहीं लगाता फिर भी ये प्राकृतिक तौर पर बड़ी संख्या में किसानो के खेतों पर पायी जाती है एवं एक सतत कृषि वानिकी विधि के रूप में प्रचलित है। शीर्ष किया द्वारा बोरड़ी व झड़ बेर दोनों को ही उन्नत किस्म के बेर में बदला जा सकता है। बोरड़ी के पुराने पेड़ों को अप्रेल/मई में जमीन की सतह से 15–20